लास्ट स्टेज वालों बच्चों प्रति बाबा कह रहे है

1 लास्ट स्टेज वालों का लक्ष्य और बोल, स्वरूप द्वारा स्पष्ट दिखाई देगा। जैसे पहला पाठ आत्मा का सुनते हो और सुनाते हो। लास्ट स्टेज वाली आत्मा सिर्फ शब्द सुनेंगी, सुनावेंगी नहीं। लेकिन साथ–साथ स्वरूप में स्थित होगी। इसको कहते हैं बाप समान बनना।

2 स्वयं का वा बाप का स्वरूप व गुण वा कर्तृतव्य, सिर्फ सुनायेंगे नहीं लेकिन हर गुण और कर्त्तव्य अपने स्वरूप द्वारा अनुभव करायेंगे।

जैसे बाप अनुभवी मूर्त्त है, सिर्फ सुनाने वाले नहीं हैं। तो ऐसे फॉलो फादर करना है। जैसे साकार में बाप को देखा, सुनाने के साथ कर्म में, स्वरूप में करके दिखाया। सुनना, सुनाना और स्वरूप बन दिखाना – तीनों ही साथ साथ चला।

16.04.77

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न :

मीठे बाबा, ब्राह्मणों की अलौकिकता कहाँ तक दिखाई देती है? इस संदर्भ मे आप क्या समझानी दे रहे है?

उत्तर :

मीठे बच्चे, ब्राह्मणों की अलौकिकता के संदर्भ मे समझा रहे है कि-

1 जैसे बाप के महावाक्य हैं कि 'मेरा जन्म और कर्म प्राकृत मनुष्यों सदृश्य नहीं, लेकिन दिव्य और अलौकिक है।' बाप-दादा के साथ-साथ आप ब्राह्मणों का जन्म भी साधारण नहीं, दिव्य और अलौकिक है। जैसा जन्म, जैसा दिव्य नाम वैसा ही दिव्य अलौकिक काम है।

2 जैसे हरेक लौकिक कुल की मर्यादा की भी लकीर होती है। ऐसे ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहते है? मर्यादाओं की लकीर, संकल्प में भी किसी आकर्षण वश उल्लंघन तो नहीं करते हैं। अर्थात् लकीर से बाहर तो नहीं जाते हैं। शूद्रपन के स्वभाव वा संस्कार की स्मृति आना अर्थात् अछूत बनना। अर्थात ब्राह्मण परिवार से अपने आप ही अपने को किनारे करना।

16.04.77

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा,
महारथियों प्रति
समझानी क्या है?

बापदादा :- प्यारे बच्चे,

❶ महारथी अर्थात् बाप समान। महारथियों के हर कदम में पद्मों की कमाई तो कामन बात है, लेकिन हर कदम में अनेक आत्माओं को पद्मापति बनाने का वरदान भरा हुआ है

❷ महारथी कहेंगे हम जाते हैं? नहीं, लेकिन साथ जाते हैं। महारथियों की सर्विस, नैनों द्वारा बाप से प्राप्त हुए वरदान अनेकों को प्राप्ति कराना अर्थात् अपने द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है।

❸ आप को देखते-देखते बाप की स्मृति स्वत: आ जाए। हरेक के दिल से निकले कि कमाल है बनाने वाले की! तो बाप प्रत्यक्ष हो जाएगा। बाप, आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई देगा और आप गुप्त हो, जायेंगे। अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है, फिर हरेक दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणगान् करते हुए सुनेंगे। आप दिखाई नहीं देंगे, लेकिन जहाँ भी देखेंगे तो बाप दिखाई देगा। इसी कारण जहाँ भी देखें वहाँ बाप ही बाप है।

❹ यह संस्कार लास्ट में समा जाते हैं जो फिर भक्ति में जहाँ देखते वहाँ 'तू ही तू' कह पुकारते हैं। लास्ट में आप सबके चेहरे दर्पण का कार्य करेंगे। जैसे आजकल मन्दिरों में ऐसे दर्पण रखते हैं जिसमें एक ही सूरत अनेक रूपों में दिखाई देती है। ऐसे आप सबके चेहरे चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष दिखाने के निमित्त बनेंगे। और भक्त कहेंगे जहाँ देखते तू ही तू।

❺ सारे कल्प के संस्कार तो यहाँ ही भरते हैं। तो भक्त इसी संस्कार से मुक्ति को प्राप्त करेंगे। इसलिए द्वापर की आत्माओं में या मुक्ति पाने का संस्कार या तू ही तू के संस्कार ज्यादा इमर्ज रहते हैं तो अपने वा बाप के भक्त भी अभी ही निश्चित होते हैं।

16.04.77

16 - 4 - 77
अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु

लास्ट स्टेज
वाले बच्चो
प्रति बाबा ने
कहाँ
जैसे साकार मे
बाप को देखा

सुनाने के साथ कर्म मे, स्वरूप मे
करके दिखाया

सुनाना, सुनाना और स्वरूप बन दिखाया

जैसे बाप
अनुभवी मूर्त है,
सिर्फ सुनाने
वाले नहीं
ऐसे फालो फादर करना है

16-04-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं बाप का सिरताज हूँ।

बाप का सिरताज अर्थात् प्रकृति के वा माया के मोहताज नहीं। विश्व के राज्य के ताजधारी। पुराने संस्कार व स्वभाव वश नहीं।

16-04-77

ब्राह्मण जन्म की दिव्यता और अलौकिकता

ब्राह्मण अर्थात् पुकारना बन्द

ब्राह्मण अर्थात् सिरताज

जैसे बाप के महावाक्य है कि 'मेरा जन्म और कर्म प्राकृत मनुष्यों सदृश्य नहीं, लेकिन दिव्य और आलौकिक है।' बाप-दादा के साथ आप ब्राह्मणों का जन्म भी साधारण नहीं, दिव्य और अलौकिक है। जैसा जन्म, जैसा दिव्य नाम वैसा ही दिव्य अलौकिक काम है। * महारथी अर्थात् बाप समाना महारथियों के हर कदम में पदमों की कमाई तो कामन बात है, लेकिन हर कदम में अनेक आत्माओं को पदमापति बनाने का वरदान भरा है।